अध्याय प्रथम

शोध - परिचय

अध्याय प्रथम

शोध - परिचय

1.1 प्रस्तावना :-

शुद्ध वायु, जल, भोजन, दुर्लभ, बढ़ा प्रदूषण का अंधियारा
प्राकृतिक संसाधन विनाशे, अस्त व्यस्त जन जीवन धारा ।।
पर्यावरण अनवरत स्वच्छ हो, ऐसी संरचना करनी है ।
धरती के कण-कण में हमको, सुरभित हरियाली भरनी है ।।

आज जबकि हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं, विकास की दौड़ में अनियंत्रित औद्योगीकरण से उत्पन्न खतरों के कारण मानव जाति के ही लोप हो जाने का खतरा हमारे समक्ष उपस्थित है ।

विभिन्न मानवीय क्रियाकलापों के फ्लस्वरुप हमारा सामाजिक परिवेश भी बदल रहा है । उपभोक्तावाद एवं प्राकृतिक संसाधनों का अपव्ययकारी प्रयोग पर्यावरण की वर्तमान नाजुक स्थिति पर और भी अधिक बोझ डाल रहे हैं । पर्यावरण के इस अपघटन से सुरक्षा और संगठन के प्रश्न पर अब नए सिरे से बल दिये जाने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में आवश्यक है कि विकास के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों में पर्यावरण जागरुकता सम्बन्धी क्रियाकलापों को दृढ़तापूर्वक सम्मिलित करने की व्यवस्था की जाए।

पर्यावरण उन सभी प्राकृतिक सामाजिक घटकों जैसे विविध घटनाओं प्रतिक्रियाओं एवं प्रति घटनाओं, का समग्र समायोजन है जिनका प्रभाव प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप में व्यक्ति के जीवन पर पड़ता है।

पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका परिवार और शिक्षा की है। बचपन से ही बालक अपने निकट के पर्यावरण से प्रभावित होने लगता है । भाषा ज्ञान एवं छोटे-मोटे क्रियाकलापों के साथ-साथ बालक में प्रेक्षण और विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों का सार्थक उपयोग करने की क्षमता को विकसित

करने पर्यावरण संबंधी ज्ञान से बालक को अपने प्राकृतिक एवं उसे समझने का व्यवस्थित व सुगठित अवसर प्राप्त होता है। इस ज्ञान का दायरा धीरे-धीरे बढता जाता है। यह बालक के निकट के पर्यावरण से प्रारंभ होता है। तत्पश्चात् संपूर्ण देश और इसी क्रम में कुछ सीमा तक विश्व तक फेलता जाता है। निरन्तर बढते हुए पर्यावरणीय हास के प्रति विश्व व्याप्त चिंता एवं चेतना के फलस्वरुप यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हमारे बालक - बालिकाओ अर्थात् नागरिकों के इस विषय के प्रति सावधान किया जाए तथा पर्यावरण की रक्षा व संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए उनमें उसके मूल्यों व मूल्यांकन के प्रति विशिष्ट जागरुकता उत्पन्न की जाये। इसके लिए यथासंभव सभी विषयों शिक्षा

पर्यावरण के विभिन्न घटकों जैसे सामाजिक तथा प्राकृतिक पर्यावरण के संबंध करके प्रदान की जाए तथा स्थानीय अवलोकन तथा प्रेक्षण पर विशेष बल दिया जाए।

पर्यावरण शिक्षा हेतु मिट्ट्यूस्किन (1980) ने दो स्तरों का निर्धारण किया।

1. शिक्षण संस्थानों के द्वारा पर्यावरण शिक्षा
2. शिक्षण संस्थानों के बाहर पर्यावरण शिक्षा

प्रथम स्तर पर पर्यावरण शिक्षा का कार्यक्रम किण्डरगार्डन, प्राथमिक, माध्यमिक द्वारा प्रदान किया जाए तथा द्वितीय स्तर पर परिवार अवकाश शिविरों पर्यटन, सांस्कृतिक आयोजनों सार्वजनिक क्रियाओं राजनीतिक संगठनों, समाचार पत्रों, आकाशवाणी दूरदर्शन चलचित्र, आदि द्वारा प्रदान किया जा सकता है।

पर्यावरण आधारित शिक्षा, शिक्षार्थी को अवसर प्रदान करती है कि वह मनुष्य एवं उसके पर्यावरण की अन्यान्य निर्भरता के उसी प्रकार समझ सके जिस प्रकार वह विज्ञान के आधारभूत तथ्यों अवधारणाओं तथा मानव के जैविक, भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के सिद्धान्तों को जानता, समझता व सीखता है । इसके द्वारा बच्चों में स्वस्थ जीवन की अनिवार्यता को समझने तथा जीवन मूल्यों एवं

गुणवत्ता में सुधार करने की योग्यता व क्षमता को विकसित किया जा सकता है।

गोपाल कृष्णन् 1992 ने एक अध्ययन में कक्षा पाँच के छात्रों को पर्यावरण शिक्षा प्रदान की तथा उन पर पर्यावरणीय शिक्षा परिक्षण के प्रशासन के फलस्वरुप पाया कि पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने से छात्रों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। शालेय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य बालक बालिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता तथा समझबूझ उत्पन्न करना है। इस आशय हेतु बच्चों के निकटतम एवं दूरस्थ परिवेश/ पर्यावरण के अनुभवों पर आधारित गणवेशनात्मक एवं खोजपूर्ण क्रिया–कलापों की सुनियोजित परिकल्पना एवं आयोजन आवश्यक है। इस प्रकार के अनुभवों के फलस्वरुप विद्यार्थी घटनाओं, प्रक्रियाओं एवं प्रकृति के रहस्यों की विवेचना करने तथा उन्हें समझने में समक्ष होते हैं। इस प्रकार उनमें प्रेक्षण, अभिलेख, वर्गीकरण, एकत्रीकरण, आंकडों के व्यवस्थीकरण, संचार, भविष्यवाणी तथा निष्कर्ष निकालने आदि की क्षमता एवं कौशल का विकास होता है और पर्यावरण स्वयं ज्ञानार्जन का माध्यम बन जाता है। इस प्रकार बच्चे पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न कारकों को स्वयं इंगित करने तथा उसे नियंत्रित करने के उपायों पर विचार–विमर्श तथा मित्रों, शिक्षकों तथा परिवार के सदस्यों आदि के सहयोग से प्रदूषण को नियंत्रित करने के प्रयास जैसे वृक्षारोपण, सफाई–अभियान, जन जागरण एवं जनसंख्या नियंत्रण संबंधी कार्यक्रमों में सकिय भागीदारी कर सकते हैं ।

यूनेस्को की रिर्पोट (1974) के अनुसार पर्यावरण शिक्षा पर्यावरणीय संरक्षण के लक्ष्यों को प्राप्त करनें का मार्ग है न कि विज्ञान की कोई अलग शाखा या अध्ययन हेतु कोई विशिष्ट विषय। इसे जीवन पर्यन्त चलने वाली शैक्षिक प्रकिया मे सम्मिलित किया जाना चाहिये। इसी के एक अन्य प्रकाशन लिविंग इन द एनवायरनमेन्ट–ए सोर्सबुक फॉर एनवायरनमेन्ट एजुकेशन में पर्यावरण शिक्षा के बारे में कहा गया है। यह एक शैक्षिक सम्प्रत्यय है जो पर्यावरण को जीवन पर्यन्त चलने वाली शैक्षिक प्रकिया में वैज्ञानिक तथा सौर्न्दयात्मक स्त्रोत के रुप में स्वीकार करती है । पर्यावरण शिक्षा के द्वारा

लोगों में मानवता के लाभ हेतु पर्यावरणीय गुणवत्ता के स्तर में सुधार संबंधी जिम्मेदारी का भाव विकसित किया जाना चाहिए।

इसके लिए पर्यावरण शिक्षा का विकास होना चाहिये। शिक्षा विदों के मस्तिष्क में पर्यावरण शिक्षा से संबंधित कुछ प्रश्न उठे जैसे इसके लिए कौन कौन से कार्यक्रम प्रभावी हो सकते है । कार्यक्रम के क्या उद्देश्य होने चाहिए, और इसे किस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है। इस क्षेत्र में इस प्रकार कार्य करना चाहिए जिससे पर्यावरण समस्या एक चुनौती बन सके एवं ''पर्यावरण शिक्षा'' शिक्षा के एक घटक के रूप में स्वीकार की जा सके।

'पर्यावरण शब्द वस्तुतः दो शब्दों का संयोग है, परि+आवरण, जिसका अभिप्राय है 'चारों ओर का घेरा' जीव के सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक कारक जिससे जीवन प्रभावित होता है, इसके अंतर्गत आते हैं। 'पर्यावरण' शब्द की इस परिभाषा से ही मानव जीवन से इसकी घनिष्टता स्पष्ट हो जाती है।

1.2 अध्ययन की आवश्यकता :-

पर्यावरण यह एक प्रत्यय है जो अपने में ही परिपूर्ण है। इन दिनों यह एक मुख्य ध्यान का विषय बन गया है, यह अपनी ओर विशिष्ट ध्यान आकर्षित कर रहा है। कई मायनों मे हमारा विज्ञान का स्कूली पाठ्यक्रम इसे पूर्ण कर रहा है। यह हमारे अभ्यास का मुख्य उददेश्य है। यह अभ्यास विज्ञान में स्कूली उपलब्धि पर्यावरणीय जागरुकता एवं विद्यार्थियों की पर्यावरणीय संवर्धन की तैयारी को केन्द्रित करता है।

विद्यार्थियों मे पर्यावरणीय जागरुकता के महत्व को ध्यान में रखकर उनके द्वारा की गयी विभिन्न तैयारियाँ एवं पर्यावरणीय संवर्धन से उसे जोड़ने को महत्व देती है।

विद्यार्थियों को पर्यावरणीय सुरक्षा की ओर ले जाने वाले विज्ञान के स्कूली पाठ्यक्रम के महत्व की पूर्ति करता है । तीव्रगति से बदलने वाली विश्व की बदलती हुई जरुरतों को पर्यावरणीय शिक्षा को उत्तर देना चाहिए।

पाठ्यक्रम में बदलाव लाना यह पर्यावरणीय शिक्षा में चर्चा का विषय हो सकता है।

सूचना सामग्री इस तरह से लिखी होनी चाहिये ताकि यह शिक्षकों को समझ मे आ सके कि विद्यार्थियों को किस तरह से निर्देशित किया जाना चाहिये ताकि वह नैसर्गिक / प्राकृतिक एवं सामाजिक घटनाओं को सराहे एवं रुचि ले।

यह अध्ययन यह देखता है, कि पर्यावरणीय शिक्षा ने पर्यावरणीय जागरुकता एवं संवर्धन की तैयारी की है या नहीं ।

विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरुकता विज्ञान की स्कूलों मे ढालकर उसे पर्यावरणीय संवर्धन में जब तक लाया नहीं जाता, तब तक पर्यावरण का घटता असंतुलन दूर नहीं किया जा सकता, इसलिये यह अध्ययन पर्यावरणीय जागरुकता एवं संवर्धन के बीच मे सहसम्बन्ध का केन्द्रित करता है।

1.3 समस्या कथन :-

''कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन एवं संवर्धन''

1.4 उद्देश्य :-

1. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता का अध्ययन करना।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन करना।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की पर्यावरण जागरुकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों का पर्यावरण संवर्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों मे पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में सामाजिक – आर्थिक स्थिति के आधार पर पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन का अध्ययन करना।

1.4 शोध की परिकल्पनाएँ :-

1. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण जागरुकता में कोई अन्तर नहीं है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं मे पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में पर्यावरण जागरुकता में कोई अन्तर नहीं है।
4. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।
6. कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों में सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर पर्यावरण जागरुकता एवं पर्यावरण संवर्धन में कोई सार्थक अन्तर नही है।

1.6 तकनीकी शब्दों की कार्यात्मक व्याख्या :-

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग किया है। तथा उनकी व्याख्या की गई है।

1. पर्यावरण
2. पर्यावरण शिक्षा
3. पर्यावरण जागरुकता
4. पर्यावरण संवर्धन

से ही संबंधित नहीं है। ब्लूम ने बताया है कि अवसर मिलने पर अधिगमकर्ता भी घटना के बारे में चेतना पाता है। यह दृष्टिकोण इस अध्ययन में रखा गया है। जागरुकता परीक्षण में उच्च उपलब्धि यह दर्शाती है कि व्यक्ति का पूर्ण पर्यावरण के प्रति बोधगम्य भी उच्च श्रेणी का है।

4. पर्यावरण संवर्धन

पर्यावरण के प्रति बोध प्राप्त होने के पश्चात व्यक्ति के पर्यावरण सम्बन्धी व्यवहार में परिवर्तन होता है एवं वह पर्यावरण को संरक्षण हेतु क्रियाकलापों में वृद्धि करता है।

1.7 अध्ययन का सीमांकन :-

1. अध्ययन अमरावती जिले के शहर एवं ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित रखा गया है।
2. अध्ययन अमरावती जिले के तीन विद्यालय तक सीमित रखा गया है।
3. अध्ययन कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।
4. अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र के 47 विद्यार्थी जिनमें 23 छात्र और 24 छात्राएं हैं,एवं शहरी क्षेत्र के 88 विद्यार्थी जिनमें 61 छात्र 27 छात्राएं हैं, तक सीमित रखा गया है।
5. अध्ययन कुल 135 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

1. **पर्यावरण :-**

पर्यावरण को हम परिभाषित कर सकते हैं त्यक्तिगत रुप से शहरी संरचना तक एवं अंत में विश्व समाज के रुप में प्रस्तुत अध्ययन यह सिर्फ जैविक विश्व एवं अन्य भौतिक सामग्री का संगठन एक गतिशील प्रणाली तक सीमित है। यह प्रणाली या परिस्थिति की जैविक, अजैविक एवं दोनो को प्रस्तुत करती है। इसमें ऐसे कारकों को सम्मिलित किया गया है जो कि जीवित रहने एवं पुनः उत्पादन में जैविक जीव जंतु या व्यक्ति पर परिणाम करते हैं। व्यक्ति एवं उसके जीव-भौतिक परिवेश को ज्यादा महत्व दिया गया है।

2. **पर्यावरण शिक्षा** :-

पिछले चार दशकों से पर्यावरण, प्रदूषण और परिस्थितिकी के बारे में संसार के सभी समुदायों द्वारा गंभीर चिंता व्यक्त की जा रही है । पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए आजकल पर्यावरण शिक्षा के महत्व का स्वीकारा जा रहा है। पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः पर्यावरण संबंधी जानकारी व समझ उत्पन्न करने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में पर्यावरण और मानव के पारस्परिक संबधों तथा पर्यावरण के संरक्षण व संवर्धन की शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार पर्यावरण द्वारा पर्यावरण के लिए पर्यावरण के बारे में जानकारी अवबोधन, रुचियों, अभिवृत्तियों एवं कोशलों के विकास संबंधी क्रियाओं के 'पर्यावरण शिक्षा' कहा जाता है।

3. **पर्यावरण जागरुकता :-**

ब्लूम ने (1956) जागरुकता को बोधात्मक एवं ग्रहणात्मकता का प्रथम सोपान बताया है। यहां अधिगमकर्ता किसी एक तत्व या उद्दीपक के अस्तित्व से संवेदनशील रहता है। ज्ञान की तरह यह सिर्फ प्रत्यास्मरण